इन्क़िलाबी नज़र
आवाज़ ... आम आदमी की
लखनऊ, बृहस्पतिवार, 19 नवम्बर 2026

जिस व्यक्ति ने कभी गलती नहीं की उसने कभी कुछ नया करने की कोशिश नहीं की।
-अल्बर्ट आइंस्टीन

वर्ष 19 अंक 76 मूल्य 4-00 रुपया पृष्ठ-12

तापमान - अधिकतम 28.4°C (+0.0) न्यूनतम 12.6°C(-0.5) सेंसेक्स 82,031.81 (-500.38) निफ्टी 25,227.95 (-159.45) सोना 1,34,410 चांदी 1,85,000 मुद्रा - डालर 93.44 दिरहम 25.44 रियाल 24.91

सीओपीडी के 90 लाख मरीजों के साथ यूपी सबसे आगे

लखनऊ (सं)। तंबाकू का सेवन नहीं करने वाले लोग भी फेफड़ों की गंभीर बीमारी सीओपीडी की चपेट में आ रहे हैं। घर में लकड़ी-उपलों का धुआं, रसोई का प्रदूषण, अगरबत्ती और मच्छर भगाने वाली कॉइल का धुआं भी फेफड़ों को नुकसान पहुंचा सकता है। ऐसे में सीओपीडी का खतरा केवल धूम्रपान करने वालों तक सीमित नहीं रह गया है। एरा विश्वविद्यालय के एराज लखनऊ मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के मेडिकल एजुकेशन निदेशक और रेस्पिरेटरी मेडिसिन के प्रोफेसर डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने विश्व सीओपीडी दिवस पर इस चुनौती के प्रति आगाह किया।

◎ प्रो. राजेन्द्र प्रसाद ने बीमारी से किया आगाह

उन्होंने बताया कि ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज रिपोर्ट-2019 के अनुसार उत्तर प्रदेश में सीओपीडी के करीब 90 लाख मरीज और दो लाख मौतें दर्ज की गई थीं। देश में लगभग 5.5 करोड़ लोग इस बीमारी से प्रभावित हैं। दुनिया में यह मृत्यु का तीसरा प्रमुख कारण है। भारत में हर साल करीब 8.4 लाख लोगों की मौत सीओपीडी के कारण होती है। डॉ. प्रसाद के मुताबिक इस वर्ष विश्व सीओपीडी दिवस की थीम बेहतर



जीवन के लिए शीघ्र निदान एवं उपचार है। इस बीमारी में फेफड़ों की वायु नलियां प्रभावित होती हैं और हवा का प्रवाह बाधित होने लगता है। लगातार खांसी, बलगम बनना और सांस फूलना इसके प्रमुख लक्षण हैं। शुरुआती दौर में मरीज इन परेशानियों को सामान्य समझकर नजरअंदाज कर देते हैं, जिससे बीमारी का पता देर से चलता है।

उन्होंने बताया कि बीड़ी पीना भी सिगरेट जितना नुकसानदेह है। फेफड़ों की टीबी का पुराना संक्रमण और घर-बाहर का प्रदूषण भी जोखिम बढ़ाते हैं। लक्षण दिखने पर स्पाइरोमेट्री जांच करानी चाहिए। समय पर पहचान, सही उपचार और प्रदूषण से बचाव के जरिए बीमारी की रफ्तार धीमी करने के साथ मरीजों की जीवन गुणवत्ता बेहतर बनाई जा सकती है।